४ संगीत पारिजात

श्रुति-स्वर के इतिहास में संगीत पारिजात का बड़ा योगदान है। यह ग्रन्थ पण्डित अहोबल द्वारा सन् १६५० में लिखा गया। यह अपने काल का प्रतिनिधि ग्रन्थ माना जाता है। इनके बाद के लगभग सभी ग्रन्थकारों में पं०

Scanned with CamScanner

अहोबल की स्पष्ट छाया दिखाई पड़ती है। अहोबल ही प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने संगीत-पारिजात में वीणा पर स्वर-स्थान निश्चित करने के लिए एक नवीन पद्धति अपनाई। इस पद्धति के द्वारा एक साधारण व्यक्ति भी स्वर की स्थापना सही ढंग से कर सकता है। संगीत पारिजात के पूर्व, स्वरों की दूरी श्रुतियों द्वारा आंकी जाती थी। श्रुति काल्पनिक माप होने के कारण श्रुति स्वर के सम्बन्ध में विद्वानों में बड़ा मतभेद था, किन्तु पं० अहोबल ने वीणा के तार पर स्वरों की स्थापना करके उस मतभेद को दूर करने में सहायता की।

यह ग्रन्थ मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है। इसके बाद स्वर, ग्राम, मूर्छना, स्वर-विस्तार, वर्ण, जाति, समय और राग प्रकरण (अध्याय) में संगीत के पारिभाषिक शब्दों और अन्य बातों पर विचार किया गया है।

स्वर प्रकरण के अन्तर्गत अहोंबल ने बताया कि हृदय स्थित अनाहत चक्र में वायु और अग्नि के संयोग से आहत नाद की उत्पत्ति होती है। आगे उन्होनें बताया कि नाद के दो प्रकार होते हैं, आहत और अनाहत। स्वर और श्रुति में सर्प और उसकी कुन्डली सा भेद है। परम्परा का पालन करते हुये उसने श्रुति की संख्या और उसके नाम बताया। उसने बाइसों श्रुतियों को पाँच भेदों में बाँटा-दीप्ता, आयता, करुणा, मृदु और मध्या। सा-म को बाह्मण, रे-ध को क्षत्रिय और ग नि को वैश्य कहा। आगे उसने स्वरों की जन्म-भूमि, उनके रंग और रस बताया। ग्राम-प्रकरण में उसने षडज, मध्यम और गन्धार इन तीनों ग्रामों के स्वरूप का भी वर्णन किया है।

मूर्छना प्रकरण के अंतर्गत मूर्छना की परिभाषा देते हुये उसने केवल षडज ग्राम की मूर्छनाओं का वर्णन किया है। मध्यम और गन्धार ग्राम की मूर्छनाओं को बिल्कुल छोड़ दिया है। शुद्ध स्वरों से सात मूर्छनाओं की रचना सभी प्राचीन विद्वानों ने की है, किन्तु उसने विकृत स्वरों से भी सम्पूर्ण जाति की मूर्छनाओं की रचना की है। इसके बाद उसने षाडव और औडव जातियों की भी शुद्ध और विकृत स्वरों की मूर्छनाओं की रचना की है। इन सब मूर्छनाओं को मिला देने से उसने बताया कि केवल षडज ग्राम से ४ लाख २० हजार १ सौ २० मूर्छनाओं की रचना हो सकती है।

Scanned with CamScanner

स्वर-प्रस्तार प्रकरण के अंतर्गत उसने बताया कि सातों स्वरों के संयोग से ४ हजार २ सौ २० स्वर-समूहों की रचना हो सकती है। वर्णलक्षणम् अध्याय के अंतर्गत वर्ण की परिभाषा बताते हुये वर्ण के ४ प्रकार बताये हैं, स्थाई, आरोही, अवरोही और संचारी। उसने अलङ्कार की परिभाषा इस प्रकार दी है, 'क्रमेण स्वरसंदर्भमलंकार' प्रचक्षते।' अलङ्कार के कई प्रकार बताये हैं जैसे–मृदु, नंद, विस्तीर्ण, जित, सोम, बिन्दु, ग्रीव, भाल, वेणि, प्रकाशक आदि। स्थाई वर्ण के ७, आरोही वर्ण के १२, अवरोही वर्ण के भी १२ और सञ्चारी वर्ण के २५ कुल मिलाकर ५६ अलंकार बताये हैं। इनके अतिरिक्त पं० अहोबल ने ५ अलंकार और बताये हैं। इन सभी अलङ्कारों के नाम, लक्षण और उदाहरण संगीत पारिजात में दिये गये हैं। स्वरों की लिपिबद्ध करने की दिशा में मन्द्र स्वर के लिये ऊपर बिंदु और तार सप्तक के लिए ऊपर खड़ी रेखा अंकित किया है।

गमक-प्रकरण में ७ शुद्ध जातियों षडजा, आर्षभी, गांधारी, मध्यमा, पञ्चमी, धैवती और नैषादी का संक्षिप्त परिचय दिया है और कंपित, प्रत्याहत, स्फुरित, घर्षण, हुम्फित आदि गमकों को समझाया गया है।

समय-प्रकरण के अंतर्गत वीणा पर स्वरों की स्थापना बताई गई है। पाँच प्रकार की गीतियाँ मानी गई हैं और उनके लक्षण दिये गये हैं। आगे एक सौ पचीस रागों का परिचय और गायन-समय बताया गया है। अहोबल ने आगे स्पष्ट रूप से लिखा हैं कि राग तो बहुत से माने गये हैं, किन्तु १२५ रागों का ही वर्णन किया है। कुल मिलाकर संगीत पारिजात में ५०० श्लोक हैं।

Scanned with CamScanner

अहोबल-कृत 'संगीत पारिजात'

यह संगीत का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसका रचना-काल लगभग १६६५ ई० का उत्तरार्ध माना जाता है। सन् १७२४ ई० में पं० दीनानाथ द्वारा इसका अनुवाद फ़ारसी में हो चुका था। इस ग्रंथ में अनेक ऐसे रागों का वर्णन है जो कि उत्तरी भारत में तो प्रचार में नहीं हैं, किन्तु दक्षिण-भारत में विशेष रूप से प्रचलित हैं। परन्तु जिस संगीत-पद्धति की विवेचना इसमें की गई है, वह ठीक उत्तरी संगीत-पद्धति ही है। इस आधार पर कुछ लोगों का अनुमान है कि अहोबल वास्तव में दक्षिण के निवासी थे और उत्तर भारत में आकर उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना की थी।

इन्होंने अपने स्वरों की स्थापना ठीक 'हृदय कौतुक' के अनुसार ही की है। इस प्रकार इसका शुद्ध सप्तक हमारे काफ़ी ठाठ की भाँति ही है। इन्होंने शुद्ध-विकृत कुल मिलाकर २६ स्वर बताए हैं। इन्होंने अपने रागों का वर्गीकरण ठाठों में नहीं किया है, किन्तु यदा-कदा ठाठों के नाम दे दिए हैं। इस ग्रन्थ में लगभग १२२ रागों का वर्णन मिलता है। प्रत्येक राग में लगने वाले स्वरों की आरोही, अवरोही तथा ग्रह, न्यास और मूर्च्छना के स्वरों का वर्णन प्राप्त होता है। उनका कहना है कि जहाँ उन्होंने न्यास और अंश स्वर का उल्लेख नहीं किया है, वहाँ इन स्वरों के स्थान पर षड्ज को ही मानना चाहिए। जिस स्वर समूह से राग प्रारम्भ होता है उसे 'उदग्राह कारक' तान कहा है। इस प्रकार की उदग्राह कारक तान प्रत्येक राग की परिभाषा के बाद में दी गई है।

Scanned with CamScanner